परहित सरिष धर्म नहिं भाई

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

परहित सरिष धर्म नहिं भाई का अर्थ है परोपकार के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। परोपकार मानव का सर्वोत्तम गुण है। परोपकार के द्वारा मानव संसार को जीत सकता है। प्रकृति हमें परोपकार की प्रेरणा देती है। वृक्ष परोपकार के लिए फल देते हैं। नदियां परोपकार के लिए बहती हैं। सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश हमें परोपकार की शिक्षा देता है। परोपकार के द्वारा जगत का कल्याण होता है। भारतीय संस्कृति में परोपकार की महिमा का गुणगान हुआ है। परोपकार का तात्पर्य है निष्काम भाव से दूसरों का उपकार करना। स्वार्थ और परार्थ से यह विश्व बना है। स्वार्थ का मतलब होता है सबकुछ अपने लिए करना, अपने परिवार के लिए करना, अपने सगे–संबंधियों के लिए करना। स्वार्थ में अपना हितचिंतन प्रदान होता है। परार्थ ठीक इसके विपरीत है। परार्थ ही परोपकार है। परोपकार में हम अपना हित छोड़कर दूसरों के लिए कार्य करते है।

शास्त्रों में परोपकार की महिमा का वर्णन खुब किया गया है। कहा गया है हाथ की शोभा दान देने से है, न कि कंगन पहनने से। वाणी की शोभा हितवचन बोलने में है, न कि बुरा वचन। बुद्धि का कार्य रचनात्मक विश्व का निर्माण करने में है, न कि विध्वंसात्मक कार्य करने में। मानव और प्रकृति एक–दूसरे के पूरक हैं। मानव का कार्य स्वार्थ और परार्थ दोनों प्रकार का होता है, किन्तु प्रकृति परोपकार ही करती है और अपना सबकुछ मानव के लिए न्यौछावर कर देती है। नदियां परोपकार के लिए ही बहती है। उसका स्वादपूर्ण और मीठा जल मानव, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी सभी पीकर अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। वृक्षों में लगा हुआ फल सभी प्राणी अपने इच्छानुसार खाते हैं। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता, नदियां स्वयं जल नहीं पीती, बल्कि परोपकार के लिए ही प्रकृति कार्य करती है। पृथ्वी के गर्भ में समाया हुआ खनिज

पदार्थ किसके लिए है? निश्चित ही यह मनुष्यों के लिए है। अतः इनका उपयोग मानव को सावधानी पूर्वक करना चाहिए और अपनी आवश्यकतानुसार ही इन्हें खर्च करना चाहिए।

आज मानव की प्रवृत्ति ऐसी हो गयी है कि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अंधाधुंध इसका दोहन कर रहा है। खनिज पदार्थ तो सीमित है। अगर इसी प्रकार से इसका दोहन होता रहा तो निश्चित ही एक दिन पृथ्वी का खजाना खाली हो जायेगा और वह इसकी पूर्ति कैसे करेगी। मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह स्वार्थ को छोड़कर परार्थ के लिए दोहन बंद करे और जहां तक हो सके जितना ग्रहण करे उससे अधिक देने का प्रयास करे। तभी परोपकार की सार्थकता है। परोपकार का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। यह सृष्टि ही परोपकार के ऊपर टिकी हुई है। श्रमशील मानव का यह कर्त्तव्य है अपने श्रम के द्वारा वह परोपकार करे। जिसके पास धन है, वह धन देकर आर्थिक सहायता देकर लोगों की सेवा करे। महात्मा गांधी ने इसके लिए एक सिद्धांत निश्चित किया था– ट्रस्टीशिप का सिद्धांत। महात्मा गांधी का मानना था कि पूंजीपति अपने धन का उपयोग ट्रस्ट के माध्यम से सामान्य जनता के लिए करें। वे यह न समझें कि धन उन्हीं का है, जितनी आवश्यकता उनकी है, उतना वे उपयोग करें शेष धन का प्रयोग समाज सेवा, शिक्षा, चिकित्सा और अन्य कार्यों में खर्च कर परोपकार का दृष्टांत समाज के सामने प्रस्तुत करें। धन का उपयोग घर में भरकर रखने के लिए नहीं बल्कि समाज सेवा के लिए होना चाहिए।

आज बहुत सी संस्थाएं ऐसी हैं जो परोपकार के लिए कार्य कर रही हैं। 'नारायण सेवा संस्थान उदयपुर' एक ऐसी संस्था है, जहां पर निःशुल्क पोलियोग्रस्त बच्चों का इलाज किया जाता है। इस संस्थान में भारत ही नहीं विदेशों से भी पोलियोग्रस्त बच्चे आते हैं। उनका इलाज, खान–पान निःशुल्क होता है। इसी प्रकार भारत में अनेक ऐसी संस्थाएं हैं, जो समाज सेवा के द्वारा परोपकार में लगी हैं। हमारे देश में सरकार भी अपना सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए जगह–जगह मूक, अंध, बधिर, विद्यालय खोलकर निःशुल्क रूप से असहाय बच्चों का पालन–पोषण कर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धाराओं में जोड़ती है। हम देखते हैं कि गर्मी के दिनों में जगह–जगह पशु–पक्षियों को पीने के लिए जल की व्यवस्था समाज की

तरफ से की जाती है, जिससे वे अपनी प्यास बुझा सके। सार्वजनिक स्थानों पर जल व्यवस्था करके लोग परोपकार का ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गर्मी के दिनों में रेलवे स्टेशनों पर स्वयंसेवी संस्थाएं जल की व्यवस्था करती हैं और जैसे ही ट्रेन स्टेशन पर पहुंचती है उनके स्वयंसेवक जल लेकर लोगों को पिलाकर उनकी प्यास शांत करते हैं।

प्राकृतिक आपदा के समय स्वयंसेवी संस्थाएं अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए पूर्ण रूप से समर्पित रहती हैं। आपदा के समय जिसको जिस चीज की आवश्यकता होती है, उन्हें वह सभी चीजें उपलब्ध करायी जाती हैं। जिससे यह विश्वास हो सके कि पूरा देश हमारे साथ है। परोपकार की भावना जीयो और जीने दो से ओतप्रोत है। विश्व में जितने भी धर्म है वे परोपकार की ही शिक्षा देते हैं। धर्म हमें यह शिक्षा देता है कि यदि पड़ोसी दुःखी है, अभावग्रस्त है तो यह कर्त्तव्य है कि यथासंभव सहायता देकर उसके दुःख को दूर करें।